UP Board Class 12 Hindi 2026 (Set 301 BG) Question Paper with Solutions

General Instructions

(i) This booklet contains 14 questions, each provided with a complete, step-by-step solution.

(ii) It comprises 19 single-correct multiple-choice questions.

(iii) Attempt each question on your own before reviewing the given solution.

1(a). 'शुक्लयुग' के निबन्धकार नहीं हैं :

(A) गुलाबराय

(B) राहुल सांकृत्यायन

(C) अध्यापक पूर्ण सिंह

(D) कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर'

Correct Answer: (D) कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर'

Solution:

चरण 1: प्रश्न को समझना:
शुक्लयुग (आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के समकालीन काल, लगभग 1900-1940 ई.) के प्रमुख निबन्धकारों में गुलाबराय, राहुल सांकृत्यायन और अध्यापक पूर्ण सिंह गिने जाते हैं।

चरण 2: विकल्पों की जाँच:
कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर' स्वातन्त्र्योत्तर काल (शुक्लोत्तर युग, 1950 के बाद) के प्रसिद्ध निबन्धकार हैं, अतः वे शुक्लयुग के अन्तर्गत नहीं आते।

अंतिम उत्तर:
विकल्प (iv) कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर' सही उत्तर है।

1(b). हिन्दी एकांकी के जनक माने जाते हैं :

(A) विष्णु प्रभाकर

(B) भुवनेश्वर प्रसाद

(C) लक्ष्मीनारायण मिश्र

(D) रामकुमार वर्मा

Correct Answer: (D) रामकुमार वर्मा

Solution:

चरण 1: प्रश्न को समझना:
हिन्दी एकांकी विधा को स्वतन्त्र और परिष्कृत रूप देने का श्रेय जिस रचनाकार को दिया जाता है, वही इस विधा का 'जनक' कहलाता है।

चरण 2: विकल्पों की जाँच:
विष्णु प्रभाकर, भुवनेश्वर प्रसाद और लक्ष्मीनारायण मिश्र भी एकांकी-लेखन से जुड़े रहे हैं, परन्तु साहित्येतिहास में सर्वसम्मति से 'हिन्दी एकांकी का जनक' रामकुमार वर्मा को ही कहा जाता है, जिन्होंने 'बादल की मृत्यु', 'पृथ्वीराज की आँखें' जैसी एकांकियाँ लिखकर इस विधा को स्थापित किया।

अंतिम उत्तर:
विकल्प (iv) रामकुमार वर्मा सही उत्तर है।

1(c). 'चंपारण में महात्मा गाँधी' जीवनीपरक कृति के लेखक हैं :

(A) डॉ. राजेन्द्रप्रसाद

(B) अमृत राय

(C) डॉ. रामविलास शर्मा

(D) सम्पूर्णानन्द

Correct Answer: (A) डॉ. राजेन्द्रप्रसाद

Solution:

चरण 1: प्रश्न को समझना:
डॉ. राजेन्द्रप्रसाद 1917 के चम्पारण सत्याग्रह में महात्मा गाँधी के निकटतम सहयोगी रहे और उन्होंने इस आन्दोलन पर संस्मरणात्मक/जीवनीपरक लेखन किया।

चरण 2: विकल्पों की जाँच:
अमृत राय (प्रेमचन्द के पुत्र, आलोचक), डॉ. रामविलास शर्मा (आलोचक-निबन्धकार) और सम्पूर्णानन्द (राजनेता-लेखक) की मुख्य पहचान अन्य विषयों के लेखन से है, चम्पारण-केन्द्रित गाँधी-जीवनी से नहीं।

अंतिम उत्तर:
विकल्प (i) डॉ. राजेन्द्रप्रसाद सही उत्तर है।

1(d). 'हर्षचरित का सांस्कृतिक अध्ययन' कृति किस गद्य-विधा की रचना है ?

(A) निबन्ध

(B) आलोचना

(C) यात्रावृत्तान्त

(D) कहानी

Correct Answer: (B) आलोचना

Solution:

चरण 1: प्रश्न को समझना:
'हर्षचरित का सांस्कृतिक अध्ययन' शीर्षक से ही स्पष्ट है कि यह किसी ग्रन्थ (बाणभट्ट-रचित 'हर्षचरित') के सांस्कृतिक पक्षों की समीक्षापरक, शोधपरक विवेचना है।

चरण 2: विकल्पों की जाँच:
यह न तो व्यक्तिगत विचार प्रधान निबन्ध है, न यात्रा-वर्णन (यात्रावृत्तान्त), न काल्पनिक कथा (कहानी) — यह मूलतः किसी कृति का गहन विश्लेषणात्मक अध्ययन होने से आलोचना विधा में आता है।

अंतिम उत्तर:
विकल्प (ii) आलोचना सही उत्तर है।

1(e). इनमें से लेखक और उसकी कृति का एक विकल्प सुमेलित नहीं है, वह है :

(A) जैनेन्द्र कुमार – 'पूर्वोदय'

(B) कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर' – 'बाजे पायलिया के घुँघरू'

(C) हजारीप्रसाद द्विवेदी – 'राष्ट्रजीवन की समस्याएँ'

(D) हरिशंकर परसाई – 'तब की बात और थी'

Correct Answer: (C) हजारीप्रसाद द्विवेदी – 'राष्ट्रजीवन की समस्याएँ'

Solution:

चरण 1: प्रश्न को समझना:
हजारीप्रसाद द्विवेदी की प्रमुख निबन्ध/ललित-रचनाएँ हैं — 'अशोक के फूल', 'विचार और वितर्क', 'कल्पलता', 'कुटज', 'विचार प्रवाह' आदि।

चरण 2: विकल्पों की जाँच:
'राष्ट्रजीवन की समस्याएँ' शीर्षक हजारीप्रसाद द्विवेदी की सुपरिचित कृतियों में सम्मिलित नहीं है, जबकि शेष तीन युग्म (जैनेन्द्र-पूर्वोदय, प्रभाकर-बाजे पायलिया के

घुँघरू, परसाई-तब की बात और थी) साहित्य-इतिहास में प्रचलित एवं मान्य युग्म हैं।

अंतिम उत्तर:
विकल्प (iii) असुमेलित है, अतः सही उत्तर है।

2(a). 'द्विवेदी-युग' के कवि नहीं हैं :

(A) गयाप्रसाद शुक्ल 'सनेही'

(B) रामनरेश त्रिपाठी

(C) अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'

(D) माखनलाल चतुर्वेदी

Correct Answer: (D) माखनलाल चतुर्वेदी

Solution:

चरण 1: प्रश्न को समझना:
द्विवेदी-युग (लगभग 1900-1920 ई., महावीरप्रसाद द्विवेदी द्वारा प्रवर्तित खड़ीबोली काव्य-आन्दोलन) के प्रमुख कवि हैं — गयाप्रसाद शुक्ल 'सनेही', रामनरेश त्रिपाठी, अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'।

चरण 2: विकल्पों की जाँच:
माखनलाल चतुर्वेदी को 'राष्ट्रकवि' कहा जाता है और उनका काव्य मुख्यतः राष्ट्रीय चेतना व छायावाद-निकटवर्ती भावभूमि से जुड़ा है, वे द्विवेदी-युग की परम्परागत खड़ीबोली कविता के प्रतिनिधि नहीं माने जाते।

अंतिम उत्तर:
विकल्प (iv) माखनलाल चतुर्वेदी सही उत्तर है।

2(b). 'स्थूल के प्रति सूक्ष्म का विद्रोह है।' — यह कथन इनमें से किस काव्य-आन्दोलन के लिए कहा गया है ?

(A) छायावाद

(B) प्रगतिवाद

(C) प्रयोगवाद

(D) नई कविता

Correct Answer: (A) छायावाद

Solution:

चरण 1: प्रश्न को समझना:
यह प्रसिद्ध आलोचनात्मक उक्ति स्थूल/भौतिक अभिव्यक्ति के स्थान पर सूक्ष्म, कल्पनाप्रधान, प्रतीकात्मक भाव-चित्रण को इंगित करती है।

चरण 2: विकल्पों की जाँच:
छायावाद की मूल प्रवृत्ति ही स्थूल यथार्थवर्णन के विरुद्ध सूक्ष्म, रहस्यात्मक एवं कल्पनाशील अभिव्यक्ति है, जबकि प्रगतिवाद स्थूल सामाजिक यथार्थ पर, प्रयोगवाद/नई कविता वैयक्तिक अनुभूति की नवीन अभिव्यक्ति-शैली पर बल देते हैं।

अंतिम उत्तर:
विकल्प (i) छायावाद सही उत्तर है।

2(c). इनमें से प्रगतिवादी कवि नहीं हैं :

(A) नागार्जुन

(B) त्रिलोचन शास्त्री

(C) केदारनाथ अग्रवाल

(D) गिरिजाकुमार माथुर

Correct Answer: (D) गिरिजाकुमार माथुर

Solution:

चरण 1: प्रश्न को समझना:
नागार्जुन, त्रिलोचन शास्त्री और केदारनाथ अग्रवाल — तीनों प्रगतिवादी काव्यधारा (सामाजिक यथार्थ, शोषण-विरोध, जनवादी चेतना) के प्रतिनिधि कवि माने जाते हैं।

चरण 2: विकल्पों की जाँच:
गिरिजाकुमार माथुर 'तारसप्तक' से जुड़े प्रयोगवादी/नई कविता धारा के कवि हैं, प्रगतिवाद के नहीं।

अंतिम उत्तर:
विकल्प (iv) गिरिजाकुमार माथुर सही उत्तर है।

2(d). 'तारसप्तक' के कवियों को 'राहों का अन्वेषी' किसने कहा है ?

(A) गजानन माधव मुक्तिबोध

(B) भारतभूषण अग्रवाल

(C) प्रभाकर माचवे

(D) सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय'

Correct Answer: (D) सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय'

Solution:

चरण 1: प्रश्न को समझना:
'तारसप्तक' (1943) के सम्पादक स्वयं अज्ञेय थे, और उन्होंने ही इसकी भूमिका में सम्मिलित नवीन कवियों की काव्य-प्रवृत्ति को रेखांकित करने वाले कई सूत्र-वाक्य दिए, जिनमें उन्हें परम्परागत मार्गों से हटकर नई काव्य-राहों का अन्वेषण करने वाला बताया गया।

चरण 2: विकल्पों की जाँच:
मुक्तिबोध, भारतभूषण अग्रवाल और प्रभाकर माचवे स्वयं तारसप्तक के कवि/सहभागी रहे, किन्तु यह विशिष्ट कथन सम्पादकीय भूमिका के रचयिता अज्ञेय का है।

अंतिम उत्तर:
विकल्प (iv) अज्ञेय सही उत्तर है।

2(e). मैथिलीशरण गुप्त की काव्यकृति नहीं है :

(A) 'यशोधरा'

(B) 'रजतशिखर'

(C) 'जयभारत'

(D) 'विष्णुप्रिया'

Correct Answer: (B) 'रजतशिखर'

Solution:

चरण 1: प्रश्न को समझना:
राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त की प्रमुख काव्यकृतियाँ हैं — साकेत, यशोधरा, पंचवटी, जयभारत, द्वापर, विष्णुप्रिया आदि।

चरण 2: विकल्पों की जाँच:
'रजतशिखर' शीर्षक गुप्त जी की मान्यता-प्राप्त रचनाओं में सम्मिलित नहीं है, जबकि यशोधरा, जयभारत और विष्णुप्रिया — तीनों प्रामाणिक रूप से उन्हीं की कृतियाँ हैं।

अंतिम उत्तर:
विकल्प (ii) 'रजतशिखर' सही उत्तर है।

3. निम्नलिखित गद्यांश पर आधारित नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर लिखिए : "राष्ट्र का तीसरा अंग जन की संस्कृति है। मनुष्यों ने युगों-युगों में जिस सभ्यता का निर्माण किया है, वही उसके जीवन की श्वास-प्रश्वास है। बिना संस्कृति के जन की कल्पना कबन्धमात्र है, संस्कृति ही जन का मस्तिष्क है। संस्कृति के विकास और अभ्युदय के द्वारा ही राष्ट्र की वृद्धि सम्भव है। राष्ट्र के समग्र रूप में भूमि और जन के साथ-साथ जन की संस्कृति का महत्त्वपूर्ण स्थान है। यदि भूमि और जन अपनी संस्कृति से विरहित कर दिये जायँ, तो राष्ट्र का लोप समझना चाहिए।" (i) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ एवं लेखक का नाम लिखिए। (ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए। (iii) मनुष्य के जीवन की श्वास-प्रश्वास क्या है? (iv) राष्ट्र का लोप कब समझना चाहिए? (v) राष्ट्र की वृद्धि कैसे सम्भव है?

Correct Answer: –

Solution:

चरण 1 (पाठ व लेखक):
यह गद्यांश राष्ट्रजीवन में संस्कृति के महत्त्व पर केन्द्रित एक विचारपरक निबन्ध का अंश है, जो राष्ट्र-निर्माण में भूमि, जन और संस्कृति — इन तीन अंगों की चर्चा करने वाले पाठ्यक्रम-निर्धारित निबन्ध से लिया गया है।

चरण 2 (रेखांकित अंश की व्याख्या):
'बिना संस्कृति के जन की कल्पना कबन्धमात्र है' — अर्थात् संस्कृति के अभाव में जनसमूह मात्र एक निष्प्राण, दिशाहीन शरीर (सिर-रहित धड़) के समान रह जाता है; संस्कृति ही जन को चेतना, विवेक और पहचान प्रदान कर उसे एक सार्थक, जीवन्त समुदाय बनाती है — यही तथ्य लेखक ने 'संस्कृति ही जन का मस्तिष्क है' कहकर स्पष्ट किया है।

चरण 3 (श्वास-प्रश्वास क्या है):
मनुष्यों ने युगों-युगों में जिस सभ्यता का निर्माण किया है, वही उसके जीवन की श्वास-प्रश्वास अर्थात् जीवन का अनिवार्य आधार है — बिना जिसके जीवन सम्भव ही नहीं।

चरण 4 (राष्ट्र का लोप):
यदि भूमि और जन को उनकी संस्कृति से विरहित (वंचित) कर दिया जाए, तो राष्ट्र का

लोप समझना चाहिए, क्योंकि संस्कृति के बिना राष्ट्र की पहचान और अस्तित्व शेष नहीं रहता।

चरण 5 (राष्ट्र की वृद्धि):
राष्ट्र की वृद्धि संस्कृति के निरन्तर विकास और अभ्युदय के माध्यम से ही सम्भव है, क्योंकि भूमि और जन के साथ-साथ संस्कृति राष्ट्र का उतना ही महत्त्वपूर्ण अंग है।

OR

निम्नलिखित गद्यांश पर आधारित प्रश्नों के उत्तर लिखिए : "अशोक-वृक्ष की पूजा इन्हीं गन्धर्वों और यक्षों की देन है। प्राचीन साहित्य में इस वृक्ष की पूजा के उत्सवों का बड़ा सरस वर्णन मिलता है। असल पूजा अशोक की नहीं, बल्कि उसके अधिष्ठाता कन्दर्प-देवता की होती थी। इसे 'मदनोत्सव' कहते थे। महाराज भोज के 'सरस्वती-कण्ठाभरण' से जान पड़ता है कि यह उत्सव त्रयोदशी के दिन होता था। 'मालविकाग्निमित्र' और 'रत्नावली' में इस उत्सव का बड़ा सरस-मनोहर वर्णन मिलता है। मैं जब अशोक के लाल स्तवकों को देखता हूँ, तो मुझे वह पुराना वातावरण प्रत्यक्ष दिखायी दे जाता है।" (i) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ एवं लेखक का नाम लिखिए। (ii) अशोक-वृक्ष की पूजा किसकी देन है? (iii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए। (iv) 'मदनोत्सव' किसे कहते हैं? (v) 'सरस्वती-कण्ठाभरण' किसकी रचना है?

Correct Answer: –

Solution:

चरण 1 (पाठ व लेखक):
यह ललित निबन्ध-शैली का अंश अशोक-वृक्ष की सांस्कृतिक-ऐतिहासिक महत्ता पर केन्द्रित एक प्रकृति-चित्रणपरक निबन्ध से लिया गया है, जिसमें लेखक प्राचीन भारतीय उत्सव-परम्परा का स्मरण करता है।

चरण 2 (पूजा किसकी देन):
अशोक-वृक्ष की पूजा गन्धर्वों और यक्षों की देन बतायी गयी है।

चरण 3 (व्याख्या):

'मैं जब अशोक के लाल स्तवकों को देखता हूँ, तो मुझे वह पुराना वातावरण प्रत्यक्ष दिखायी दे जाता है' — इस पंक्ति में लेखक अशोक-वृक्ष के लाल पुष्प-गुच्छों को देखकर प्राचीन काल के मदनोत्सव के सजीव, उल्लासपूर्ण वातावरण की कल्पना में खो जाता है; यह वर्तमान दृश्य के माध्यम से अतीत के सांस्कृतिक वैभव के स्मरण को दर्शाता है।

चरण 4 (मदनोत्सव):
अशोक-वृक्ष की असल पूजा वृक्ष की नहीं, बल्कि उसके अधिष्ठाता देवता कन्दर्प (कामदेव) की होती थी, और इसी उत्सव को 'मदनोत्सव' कहा जाता था।

चरण 5 (सरस्वती-कण्ठाभरण):
'सरस्वती-कण्ठाभरण' महाराज भोज की रचना है, जिससे यह ज्ञात होता है कि मदनोत्सव त्रयोदशी तिथि को मनाया जाता था।

4. निम्नलिखित पद्यांश पर आधारित नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर लिखिए : "कबहुँ होत सत चंद कबहुँ प्रगटत दुरि भाजत। पवन गवन बस बिंब रूप जल मैं बहु साजत॥ मनु ससि भरि अनुराग जमुन जल लोटत डोलै। कै तरंग की डोर हिंडोरनि करति कलोलै॥ कै बालगुड़ी नभ मैं उड़ी सोहत इत-उत धावती। कै अवगाहत डोलत कोउ ब्रजरमनी जल आवती॥" (i) उपर्युक्त पद्यांश के पाठ एवं रचयिता का नाम लिखिए। (ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए। (iii) 'मनु ससि भरि अनुराग जमुन जल लोटत डोलै।' इस पंक्ति में प्रयुक्त अलंकार का नाम लिखिए। (iv) 'बालगुड़ी' तथा 'हिंडोरनि' शब्द का अर्थ लिखिए। (v) 'अवगाहन' यह शब्द किस शब्द का पर्यायवाची शब्द है?

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1 (पाठ व रचयिता):
यह पद्यांश रीतिकालीन ब्रजभाषा-काव्य की उस परम्परा से है जिसमें जल में प्रतिबिम्बित चन्द्रमा के चंचल दृश्य का सजीव चित्रण किया गया है — यह पाठ्यक्रम में निर्धारित रीतिकालीन कवि की रचना से लिया गया अंश है।

चरण 2 (व्याख्या):
पंक्तियों में कवि कहता है कि यमुना के जल में चन्द्रमा का प्रतिबिम्ब कभी सत्य-सा (स्थिर) दिखता है, कभी हवा के झोंकों से दूर भागता प्रतीत होता है; मानो चन्द्रमा प्रेम से भरकर स्वयं यमुना के जल में लोट-पोट हो रहा हो, या तरंगों की डोरी से झूला झूल रहा हो, या आकाश में उड़ती हुई पतंग की भाँति इधर-उधर दौड़ रहा हो, अथवा कोई ब्रज-रमणी स्नान करते हुए जल में हिलोरें ले रही हो — यह सब चन्द्र-प्रतिबिम्ब की जल में होने वाली चंचल हलचल के काव्यात्मक उत्प्रेक्षापूर्ण चित्रण हैं।

चरण 3 (अलंकार):
'मनु ससि भरि अनुराग जमुन जल लोटत डोलै' पंक्ति में चन्द्रमा की तुलना प्रेम में लोटते हुए किसी प्रेमी से की गयी है, जो सम्भावना/कल्पना व्यक्त करने वाले 'मनु' शब्द के प्रयोग के कारण उत्प्रेक्षा अलंकार है।

चरण 4 (शब्दार्थ):
'बालगुड़ी' का अर्थ है छोटी पतंग/गुड़िया के समान उड़ने वाली वस्तु, और 'हिंडोरनि' का अर्थ है झूला/हिंडोला।

चरण 5 (पर्यायवाची):
'अवगाहन' शब्द 'स्नान' अथवा 'डुबकी लगाना' का पर्यायवाची है।

OR

निम्नलिखित पद्यांश पर आधारित प्रश्नों के उत्तर लिखिए : "सामने टिकते नहीं वनराज, पर्वत डोलते हैं, काँपता है कुंडली मारे समय का व्याल, मेरी बाँह में मारुत, गरण, गजराज का बल है। मर्त्य मानव की विजय का तूर्य हूँ मैं, उर्वशी! अपने समय का सूर्य हूँ मैं। अंध तम के भाल पर पावक जलाता हूँ, बादलों के सीस पर स्यन्दन चलाता हूँ।" (i) उपर्युक्त पद्यांश के पाठ और कवि का नाम लिखिए। (ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए। (iii) राजा पुरुरवा अपने मन की स्थिति का वर्णन किससे कर रहे हैं? (iv) 'व्याल' और 'स्यन्दन' शब्द का अर्थ लिखिए। (v) 'मारुत' और 'पावक' किसके पर्यायवाची शब्द हैं?

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1 (पाठ व कवि):
यह पद्यांश दिनकरकृत खण्डकाव्य 'उर्वशी' का अंश है, जिसमें राजा पुरुरवा उर्वशी के समक्ष अपने आत्मविश्वास और पौरुष-बल का उद्घोष कर रहे हैं।

चरण 2 (व्याख्या):
राजा पुरुरवा कहते हैं कि उनके सामने न वन के राजा सिंह टिक पाते हैं, न पर्वत उनके तेज से काँपने लगते हैं, और काल-सर्प (समय का व्याल) भी उनकी शक्ति से थर्रा उठता है — अर्थात् वे अपने भुजबल की तुलना वायु, हाथी और सिंह के संयुक्त बल से करते हुए स्वयं को मानव-विजय का शंखनाद तथा अपने युग का सूर्य घोषित करते हैं, जो अन्धकार में प्रकाश (पावक) जलाकर बादलों तक अपने रथ (स्यन्दन) की गति पहुँचाने में समर्थ है।

चरण 3 (किससे वर्णन):
राजा पुरुरवा अपने मन की स्थिति का वर्णन उर्वशी के समक्ष कर रहे हैं।

चरण 4 (शब्दार्थ):
'व्याल' का अर्थ है सर्प और 'स्यन्दन' का अर्थ है रथ।

चरण 5 (पर्यायवाची):
'मारुत' वायु का पर्यायवाची है और 'पावक' अग्नि का पर्यायवाची है।

5(a). निम्नलिखित में से किसी एक लेखक का जीवन-परिचय देते हुए उनकी कृतियों का उल्लेख कीजिए (वासुदेवशरण अग्रवाल / कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर' / हरिशंकर परसाई) : (अधिकतम शब्द-सीमा 80 शब्द)

Correct Answer: —

Solution:

मॉडल उत्तर — हरिशंकर परसाई:
व्यंग्य-सम्राट हरिशंकर परसाई (जन्म 1924, इटारसी, मध्यप्रदेश; निधन 1995) हिन्दी के सर्वाधिक चर्चित व्यंग्यकारों में गिने जाते हैं। उन्होंने समाज, राजनीति और मध्यवर्गीय पाखण्ड पर तीखे, प्रभावशाली व्यंग्य लिखे। उनकी प्रमुख कृतियाँ हैं — 'तब की बात और थी', 'विकलांग श्रद्धा का दौर', 'सदाचार का ताबीज', 'ठिठुरता हुआ गणतंत्र', 'वैष्णव की फिसलन' और उपन्यास 'रानी नागफनी की कहानी'। उनकी भाषा सहज, प्रवाहमयी और मारक व्यंग्यशक्ति से युक्त है, जिसने हिन्दी व्यंग्य-साहित्य को नई ऊँचाई दी।

5(b). निम्नलिखित में से किसी एक कवि का जीवन-परिचय देते हुए उसकी साहित्यिक विशेषताएँ लिखिए (भारतेन्दु हरिश्चन्द्र / सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' / महादेवी वर्मा) : (अधिकतम शब्द-सीमा 80 शब्द)

Correct Answer: —

Solution:

मॉडल उत्तर — महादेवी वर्मा:
महादेवी वर्मा (1907-1987, फर्रुखाबाद) छायावाद की प्रमुख स्तम्भ कवयित्री और 'आधुनिक मीरा' के रूप में विख्यात हैं। उनकी काव्य-कृतियाँ 'नीहार', 'रश्मि', 'नीरजा', 'सांध्यगीत', 'यामा' में वेदना, रहस्यानुभूति और करुणा प्रमुख स्वर हैं। गद्य में 'स्मृति की रेखाएँ', 'अतीत के चलचित्र' जैसे संस्मरणात्मक रेखाचित्र प्रसिद्ध हैं। उनकी भाषा संस्कृतनिष्ठ, कोमल एवं भावप्रवण है, जिसमें नारी-संवेदना व करुणा की गहन अभिव्यक्ति मिलती है — इसी कारण वे छायावाद की 'वेदना की कवयित्री' कहलाती हैं।

6. 'लाटी' कहानी के प्रमुख पात्र का चरित्रचित्रण कीजिए। (अधिकतम शब्द-सीमा 80 शब्द)

Correct Answer: —

Solution:

चरित्रचित्रण:
'लाटी' कहानी की मुख्य पात्र लाटी एक सीधी-सादी, संघर्षशील ग्रामीण स्त्री है, जो विषम पारिवारिक परिस्थितियों के बावजूद अपने आत्मसम्मान और स्नेह-भावना को नहीं छोड़ती। वह सहनशीलता, ममता और भीतरी दृढ़ता की प्रतीक है — बाह्य रूप से सरल किन्तु आन्तरिक रूप से अत्यन्त सशक्त। उसका चरित्र ग्रामीण भारतीय नारी के त्याग, धैर्य और मूक संघर्ष का यथार्थवादी चित्रण प्रस्तुत करता है, जो कठिनतम परिस्थितियों में भी मानवीय सम्बन्धों की गरिमा बनाए रखती है।

OR

'पंचलाइट' कहानी के उद्देश्य पर प्रकाश डालिए। (अधिकतम शब्द-सीमा 80 शब्द)

Correct Answer: —

Solution:

उद्देश्य-विवेचन:
फणीश्वरनाथ 'रेणु' रचित 'पंचलाइट' कहानी का मूल उद्देश्य ग्रामीण समाज में व्याप्त रूढ़िवादिता, जातिगत भेदभाव और सामूहिक निर्णय-प्रक्रिया की विडम्बना को हास्य-व्यंग्य के माध्यम से उजागर करना है। पेट्रोमैक्स (पंचलाइट) जलाने जैसी साधारण घटना के इर्द-गिर्द बुनी गयी कथा वास्तव में ग्राम-पंचायत की संकीर्णता, प्रेम की सहजता और सामाजिक कुरीतियों के प्रति सजग करती है, साथ ही आधुनिकता और परम्परा के द्वन्द्व को भी मार्मिक रूप से प्रस्तुत करती है।

7(a). स्वपठित खण्डकाव्य के आधार पर निम्नलिखित में से किसी एक प्रश्न का उत्तर दीजिए : 'रश्मिरथी' खण्डकाव्य के आधार पर 'कर्ण' का चरित्रचित्रण कीजिए। (अधिकतम शब्द-सीमा 80 शब्द)

Correct Answer: —

Solution:

चरित्रचित्रण:
रामधारी सिंह 'दिनकर' रचित खण्डकाव्य 'रश्मिरथी' का नायक कर्ण दानवीरता, स्वाभिमान और वचनबद्धता का प्रतिमान है। सूतपुत्र कहकर अपमानित होने पर भी वह अपने आत्मबल से महारथी बनता है और मित्रता (दुर्योधन के प्रति) में अन्त तक निष्ठावान रहता है। कवच-कुण्डल इन्द्र को दान कर वह अपनी उदारता प्रमाणित करता है। कर्ण का चरित्र वर्ण-व्यवस्था के विरुद्ध संघर्ष, नियति की विडम्बना और मानवीय गरिमा के उदात्त संश्लेषण का प्रतीक है।

OR

'रश्मिरथी' खण्डकाव्य की विशेषताएँ लिखिए। (अधिकतम शब्द-सीमा 80 शब्द)

Correct Answer: —

Solution:

विशेषताएँ:
'रश्मिरथी' की प्रमुख विशेषताएँ हैं — ओजपूर्ण, प्रवाहमयी भाषा-शैली; कर्ण के माध्यम से सामाजिक विषमता व वर्ण-भेद पर तीखा प्रहार; मानवीय गरिमा और स्वाभिमान का उदात्त चित्रण; तथा प्रसंगानुकूल संवादों में नाटकीयता। दिनकर ने पौराणिक कथा को समसामयिक सामाजिक चेतना से जोड़कर एक कालजयी काव्य-कृति का निर्माण किया है।

8(a). निम्नलिखित संस्कृत गद्यांशों में से किसी एक का सन्दर्भसहित हिन्दी में अनुवाद कीजिए : "संस्कृतसाहित्यस्य आदिकविः वाल्मीकिः, महर्षिव्यासः, कविकुलगुरुः कालिदासः अन्ये च भासभारवि-भवभूत्यादयो महाकवयः स्वकीयैः ग्रन्थरत्नैः अद्यापि पाठकानां हृदि विराजन्ते। इयं भाषा अस्माभिः मातृसमं सम्माननीया वन्दनीया च, यतो भारतमातुः स्वातन्त्र्यं, गौरवम्, अखण्डत्वं सांस्कृतिकमेकत्वञ्च संस्कृतेनैव सुरक्षितुं शक्यन्ते। इयं संस्कृतभाषा सर्वासु भाषासु प्राचीनतमा श्रेष्ठा चास्ति। ततः सुष्ठूक्तम् 'भाषासु मुख्या मधुरा दिव्या गीर्वाणभारती' इति।"

Correct Answer: —

Solution:

सन्दर्भ:
प्रस्तुत गद्यांश संस्कृत भाषा एवं साहित्य के गौरव तथा उसकी सांस्कृतिक महत्ता पर केन्द्रित पाठ से उद्धृत है, जिसमें संस्कृत को भारतीय सभ्यता की एकता व अखण्डता का आधार बताया गया है।

हिन्दी अनुवाद:
संस्कृत साहित्य के आदिकवि वाल्मीकि, महर्षि व्यास, कविकुलगुरु कालिदास तथा अन्य भास, भारवि, भवभूति आदि महाकवि अपने ग्रन्थरत्नों के द्वारा आज भी पाठकों के हृदय में विराजमान हैं। यह भाषा (संस्कृत) हमारे द्वारा माता के समान सम्माननीय एवं वन्दनीय है, क्योंकि भारतमाता की स्वतन्त्रता, गौरव, अखण्डता और सांस्कृतिक एकता संस्कृत भाषा के द्वारा ही सुरक्षित रखी जा सकती है। यह संस्कृत भाषा सभी भाषाओं में सबसे प्राचीन और श्रेष्ठ है। इसीलिए भली-भाँति कहा गया है — 'भाषाओं में प्रमुख, मधुर तथा दिव्य देववाणी (संस्कृत) है'।

OR

निम्नलिखित संस्कृत गद्यांश का सन्दर्भसहित हिन्दी में अनुवाद कीजिए : "यदा अयं षोडशवर्षदेशीयः आसीत् तदास्य कनीयसी भगिनीः विषूचिकया पञ्चत्वं गता। वर्षत्रयानन्तरम् अस्य पितृव्योऽपि दिवंगतः। द्वयोर्नयोः मृत्युं दृष्ट्वा आसीत् अस्य मनसि — कथमहं कथं वा अयं लोकः मृत्युभयात् मुक्तः स्यादिति चिन्तयतः एतस्य हृदि सहसैव वैराग्यप्रदीपः प्रज्वलितः। एकस्मिन् दिवसे अस्तंगते भगवति भास्वति मूलशङ्करः गृहमत्यजत्। सप्तदशवर्षाणि यावत् अमरत्वप्राप्त्युपायं चिन्तयन् मूलशङ्करः ग्रामाद् ग्रामं, नगरान्नगरं वनाद् वनं, पर्वतात् पर्वतमभ्रमत् परं नाविन्दत् अतितरां तृप्तिम्।"

Correct Answer: —

Solution:

सन्दर्भ:
यह गद्यांश आर्यसमाज के संस्थापक स्वामी दयानन्द सरस्वती (बाल्यनाम मूलशंकर)

के जीवन-प्रसंग पर आधारित पाठ से लिया गया है, जो उनके वैराग्य ग्रहण करने की घटना का वर्णन करता है।

हिन्दी अनुवाद:
जब यह (मूलशंकर) सोलह वर्ष का था, तब इसकी छोटी बहन हैजा (विषूचिका) रोग से मृत्यु को प्राप्त हो गयी। तीन वर्ष बाद इसके चाचा का भी देहान्त हो गया। दोनों की मृत्यु देखकर इसके मन में यह विचार उठा — 'मैं कैसे और यह संसार कैसे मृत्यु के भय से मुक्त हो सके' — ऐसा सोचते हुए इसके हृदय में सहसा ही वैराग्य का दीपक जल उठा। एक दिन सूर्यास्त होते ही मूलशंकर ने घर त्याग दिया। सत्रह वर्षों तक अमरत्व प्राप्ति का उपाय सोचते हुए मूलशंकर गाँव-गाँव, नगर-नगर, वन-वन, पर्वत-पर्वत भटकते रहे, परन्तु उन्हें अत्यधिक तृप्ति प्राप्त नहीं हुई।

8(b). निम्नलिखित संस्कृत पद्यांशों में से किसी एक का सन्दर्भसहित हिन्दी में अनुवाद कीजिए : "प्रजानां विनयाधानाद् रक्षणाद् भरणादपि। स पिता पितरस्तासां केवलं जन्महेतवः॥"

Correct Answer: —

Solution:

सन्दर्भ:
यह श्लोक कालिदास-रचित 'रघुवंश' महाकाव्य से लिया गया है, जिसमें आदर्श राजा की प्रजापालन-सम्बन्धी जिम्मेदारी का वर्णन किया गया है।

हिन्दी अनुवाद:
प्रजा को विनय (सुसंस्कार) प्रदान करने से, उनकी रक्षा करने से, तथा उनका भरण-पोषण करने से वही (राजा) वास्तविक पिता है — साधारण जन्मदाता माता-पिता तो केवल जन्म के कारण-मात्र होते हैं।

भावार्थ:
कवि यह स्पष्ट करना चाहते हैं कि सच्चा पितृत्व केवल जन्म देने से नहीं, अपितु

संस्कार, सुरक्षा और पालन-पोषण के उत्तरदायित्व-निर्वहन से सिद्ध होता है — यह आदर्श राजा-धर्म का प्रतिपादन करने वाला श्लोक है।

OR

निम्नलिखित संस्कृत पद्यांश का सन्दर्भसहित हिन्दी में अनुवाद कीजिए : "निन्दन्तु नीतिनिपुणा यदि वा स्तुवन्तु लक्ष्मीः समाविशतु गच्छतु वा यथेष्टम्। अद्यैव वा मरणमस्तु युगान्तरे वा न्याय्यात् पथः प्रविचलन्ति पदं न धीराः॥"

Correct Answer: —

Solution:

सन्दर्भ:
यह प्रसिद्ध श्लोक भर्तृहरि-रचित 'नीतिशतक' से लिया गया है, जिसमें धीर/स्थितप्रज्ञ पुरुष के अडिग नैतिक चरित्र का वर्णन है।

हिन्दी अनुवाद:
नीति में निपुण लोग चाहे निन्दा करें या स्तुति करें, लक्ष्मी चाहे आये या इच्छानुसार चली जाये, मृत्यु चाहे आज ही हो या युगान्तर में हो — धीर (स्थिरबुद्धि) पुरुष न्यायपूर्ण मार्ग से एक कदम भी विचलित नहीं होते।

भावार्थ:
यह श्लोक यह सन्देश देता है कि सच्चे धैर्यवान् मनुष्य बाह्य निन्दा-स्तुति, धन-हानि-लाभ अथवा मृत्यु के भय से कभी अपने सत्य और न्याय के मार्ग को नहीं छोड़ते — यही आदर्श चरित्र की पहचान है।

9. निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में दीजिए : (क) मैत्रेयी कस्य पत्नी आसीत्? (ख) हंसराजः स्वदुहितरं कस्मै अददात्?

Correct Answer: —

Solution:

प्रश्न (क) का उत्तर:
संस्कृत में: "मैत्रेयी याज्ञवल्क्यस्य पत्नी आसीत्।"
हिन्दी भावार्थ: मैत्रेयी महर्षि याज्ञवल्क्य की पत्नी थीं (बृहदारण्यक उपनिषद् में वर्णित विदुषी नारी, जो आत्मज्ञान की जिज्ञासु थीं)।

प्रश्न (ख) का उत्तर:
संस्कृत में: "हंसराजः स्वदुहितरं दमयन्त्याः स्वयंवरे नलाय अददात्।"
हिन्दी भावार्थ: हंसराज (भीमराज) ने अपनी पुत्री दमयन्ती का विवाह स्वयंवर में राजा नल के साथ सम्पन्न कराया।

10(a). 'शृंगार' रस की परिभाषा लिखकर एक उदाहरण दीजिए।

Correct Answer: –

Solution:

परिभाषा:
जहाँ नायक-नायिका के मन में परस्पर रति (प्रेम) भाव का स्थायी भाव विभाव, अनुभाव और संचारी भावों के संयोग से रसरूप में परिपुष्ट होकर व्यक्त होता है, वहाँ शृंगार रस होता है। यह संयोग और वियोग – दो भेदों में विभक्त है।

उदाहरण:
"बतरस लालच लाल की, मुरली धरी लुकाय। सैंया भए कोतवाल, अब डर काहे को।" – इस पंक्ति में नायिका के मुरली छिपाने के प्रसंग से शृंगार (संयोग) रस की व्यंजना होती है।

10(b). 'रूपक' अलंकार की परिभाषा लिखकर एक उदाहरण दीजिए।

Correct Answer: –

Solution:

परिभाषा:
जहाँ उपमेय और उपमान में इतनी अधिक समानता दिखाई जाती है कि दोनों में कोई भेद ही नहीं रह जाता और उपमेय पर उपमान का सर्वथा आरोप कर दिया जाता है (बिना 'सा/समान/जैसा' आदि वाचक शब्दों के), वहाँ रूपक अलंकार होता है।

उदाहरण:
"चरण-कमल बंदौं हरि राई।" – यहाँ 'चरण' (उपमेय) पर 'कमल' (उपमान) का सीधा आरोप किया गया है, अतः यहाँ रूपक अलंकार है।

10(c). 'सोरठा' छन्द की उदाहरण-सहित परिभाषा दीजिए।

Correct Answer: –

Solution:

परिभाषा:
सोरठा एक अर्द्धसम मात्रिक छन्द है, जो दोहे का उल्टा रूप है – इसमें चार चरण होते हैं, प्रथम व तृतीय चरण में 11-11 मात्राएँ तथा द्वितीय व चतुर्थ चरण में 13-13 मात्राएँ होती हैं (दोहे में यह क्रम उलटा होता है)। विषम चरणों के अन्त में लघु-गुरु तथा सम चरणों के अन्त में गुरु-लघु मात्राक्रम अनिवार्य होता है।

उदाहरण:
"जाकी रही भावना जैसी, प्रभु मूरत देखी तिन तैसी।" – यह प्रसिद्ध पंक्ति सोरठा छन्द का उदाहरण है।

11. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर निबन्ध लिखिए : विज्ञान वरदान है या अभिशाप

Correct Answer: –

Solution:

प्रस्तावना:
विज्ञान ने मानव-जीवन को अभूतपूर्व सुविधाएँ प्रदान की हैं, परन्तु साथ ही इसके दुरुपयोग ने अनेक गम्भीर समस्याएँ भी उत्पन्न की हैं। यही विरोधाभास विज्ञान को 'वरदान' और 'अभिशाप' – दोनों रूपों में देखे जाने का आधार बनता है।

वरदान के रूप में विज्ञान:
चिकित्सा-क्षेत्र में असाध्य रोगों का उपचार, संचार-साधनों से दूरियों का सिमटना, कृषि में उत्पादन-वृद्धि, यातायात के तीव्र साधन तथा शिक्षा-सुलभता – इन सबने मानव-जीवन को सरल, सुखद और समृद्ध बनाया है। आज इण्टरनेट, चिकित्सा-तकनीक और ऊर्जा-स्रोतों ने जीवन-स्तर को अत्यधिक ऊँचा उठाया है।

अभिशाप के रूप में विज्ञान:
परमाणु अस्त्रों का विनाशकारी प्रयोग, पर्यावरण-प्रदूषण, प्राकृतिक संसाधनों का अन्धाधुन्ध दोहन, तथा सोशल मीडिया की लत जैसी समस्याएँ भी विज्ञान की ही देन हैं। यदि विज्ञान का प्रयोग विवेकहीन ढंग से किया जाए, तो यह मानवता के लिए घातक सिद्ध हो सकता है।

उपसंहार:
वस्तुतः विज्ञान स्वयं न तो वरदान है न अभिशाप – यह मनुष्य के उपयोग की दिशा पर निर्भर करता है। यदि विज्ञान का प्रयोग मानव-कल्याण और सन्तुलित विकास के लिए विवेकपूर्ण ढंग से किया जाए, तो यह निश्चय ही वरदान सिद्ध होगा।

12(a)(i). 'प्रेजते' का सन्धि-विच्छेद है :

(A) प्रे + जते

(B) प्रेज + ते

(C) प्र + एजते

(D) प्रेय + ते

Correct Answer: (C) प्र + एजते

Solution:

चरण 1: प्रश्न को समझना:
गुण सन्धि नियमानुसार अ + ए = ए होता है।

चरण 2: विकल्पों की जाँच:
प्र (अ-अन्त) + एजते (ए-आदि) मिलकर 'प्रेजते' बनता है, जो गुण सन्धि का उदाहरण है।

अंतिम उत्तर:
विकल्प (C) प्र + एजते सही उत्तर है।

12(a)(ii). 'कश्चित्' का सन्धि-विच्छेद है :

(A) कस् + चित्

(B) कष् + चित्

(C) कस + चित्

(D) कश + चित्

Correct Answer: (A) कस् + चित्

Solution:

चरण 1: प्रश्न को समझना:
विसर्ग सन्धि में मूल 'कस्' के स् का, 'चित्' से पहले श्-आदेश होकर 'कश्चित्' रूप

बनता है।

चरण 2: विकल्पों की जाँच:
अन्य विकल्पों में मूल रूप या सन्धि-नियम असंगत हैं।

अंतिम उत्तर:
विकल्प (A) कस् + चित् सही उत्तर है।

12(a)(iii). 'निस्तारणम्' का सन्धि-विच्छेद है :

(A) निस्ता + रणम्

(B) निस्त + आरणम्

(C) निस + तारणम्

(D) निः + तारणम्

Correct Answer: (D) निः + तारणम्

Solution:

चरण 1: प्रश्न को समझना:
विसर्ग सन्धि नियमानुसार 'निः' के विसर्ग का त-वर्ग (त) से पूर्व स्-आदेश होकर 'निस्तारणम्' रूप बनता है।

चरण 2: विकल्पों की जाँच:
मूल शब्द 'निः' (उपसर्ग) + 'तारणम्' (पार उतारना) है।

अंतिम उत्तर:
विकल्प (D) निः + तारणम् सही उत्तर है।

12(b)(i). 'निर्दोष' शब्द में समास है :

(A) कर्मधारय

(B) बहुव्रीहि

(C) अव्ययीभाव

(D) द्वन्द्व

Correct Answer: (C) अव्ययीभाव

Solution:

चरण 1: प्रश्न को समझना:
'निर्' एक अव्यय-उपसर्ग है, जो निषेधार्थक भाव प्रकट करता है।

चरण 2: विकल्पों की जाँच:
जब समास का पहला पद अव्यय हो और सम्पूर्ण पद भी अव्यय की भाँति प्रयुक्त हो (जैसे निर्भय, निर्जल), तो वह अव्ययीभाव समास कहलाता है।

अंतिम उत्तर:
विकल्प (C) अव्ययीभाव सही उत्तर है।

12(b)(ii). 'त्रिनेत्रः' शब्द में समास है :

(A) बहुव्रीहि

(B) तत्पुरुष

(C) अव्ययीभाव

(D) कर्मधारय

Correct Answer: (A) बहुव्रीहि

Solution:

चरण 1: प्रश्न को समझना:
'त्रिनेत्रः' का अर्थ है 'जिसके तीन नेत्र हैं' अर्थात् शिव।

चरण 2: विकल्पों की जाँच:
यह पद स्वयं अपने अर्थ को नहीं, अपितु किसी अन्य (शिव) की विशेषता को व्यक्त करता है, जो बहुव्रीहि समास की पहचान है।

अंतिम उत्तर:
विकल्प (A) बहुव्रीहि सही उत्तर है।

13(a)(i). 'श्रुत्वा' शब्द में प्रयुक्त प्रत्यय है :

(A) क्त

(B) क्त्वा

(C) त्व

(D) मतुप्

Correct Answer: (B) क्त्वा

Solution:

चरण 1: प्रश्न को समझना:
'श्रु' धातु में 'पूर्वकालिक क्रिया' (having heard) का बोध कराने वाला प्रत्यय जोड़ा गया है।

चरण 2: विकल्पों की जाँच:
क्त्वा प्रत्यय पूर्वकालिक क्रिया (गत्वा, कृत्वा, दृष्ट्वा जैसे रूपों) बनाने में प्रयुक्त होता है।

अंतिम उत्तर:
विकल्प (B) क्त्वा सही उत्तर है।

13(a)(ii). 'रूपवान्' शब्द में प्रयुक्त प्रत्यय है :

(A) मतुप्

(B) वतुप्

(C) अनीयर्

(D) तव्यत्

Correct Answer: (A) मतुप्

Solution:

चरण 1: प्रश्न को समझना:
'रूप' शब्द में स्वामित्व/विशेषता-बोधक प्रत्यय जोड़कर 'रूपवान्' (सुन्दर रूप वाला) रूप बनाया गया है।

चरण 2: विकल्पों की जाँच:
स्वामित्व-अर्थ में प्रयुक्त होने वाला मानक प्रत्यय मतुप् है, जो गुणवान्, बलवान् जैसे रूपों में भी लगता है।

अंतिम उत्तर:
विकल्प (A) मतुप् सही उत्तर है।

13(b)(i). 'येनाङ्गविकारः' का उदाहरण है :

(A) छात्रेण सह शिक्षकः गच्छति।

(B) सः शिरसा खल्वाटः।

(C) तस्मै श्रीगुरवे नमः।

(D) नदीनां गङ्गा श्रेष्ठा।

Correct Answer: (B) सः शिरसा खल्वाटः।

Solution:

चरण 1: प्रश्न को समझना:
'येनाङ्गविकारः' कारक-नियम में तृतीया विभक्ति का प्रयोग तब होता है जब किसी कारण से शरीर के किसी अंग में विकार/परिवर्तन का बोध कराना हो।

चरण 2: विकल्पों की जाँच:
'सः शिरसा खल्वाटः' (वह सिर से गंजा है) में 'शिरसा' शब्द से सिर सम्बन्धी विकार (गंजापन) व्यक्त हो रहा है, जो इसी नियम का उदाहरण है।

अंतिम उत्तर:
विकल्प (B) सही उत्तर है।

13(b)(ii). 'षष्ठी शेषे' का उदाहरण है :

(A) सः विद्यालयं प्रति गच्छति।

(B) पुत्रेण सह पिता गच्छति।

(C) सुग्रीवः रामस्य सखा आसीत्।

(D) दैत्येभ्यः हरिः अलम्।

Correct Answer: (C) सुग्रीवः रामस्य सखा आसीत्।

Solution:

चरण 1: प्रश्न को समझना:
'षष्ठी शेषे' नियम तब लागू होता है जब सम्बन्ध सामान्य स्वामित्व/अन्विति का हो और किसी विशिष्ट कारक-नियम के अन्तर्गत न आता हो।

चरण 2: विकल्पों की जाँच:
'सुग्रीवः रामस्य सखा आसीत्' में 'रामस्य' (राम का मित्र) सामान्य सम्बन्धसूचक षष्ठी है।

अंतिम उत्तर:
विकल्प (C) सही उत्तर है।

14. अपने मोहल्ले की गन्दी नालियों की सफाई के लिए नगर निगम के स्वास्थ्य अधिकारी को एक पत्र लिखिए।

Correct Answer: –

Solution:

मॉडल पत्र:
सेवा में,
स्वास्थ्य अधिकारी महोदय,
नगर निगम, लखनऊ।
विषय : मोहल्ले की गन्दी नालियों की सफाई हेतु।

महोदय,
सविनय निवेदन है कि मैं आपके ध्यान में अपने मोहल्ले 'रामनगर' की नालियों की अत्यन्त दयनीय स्थिति लाना चाहता हूँ। विगत कई सप्ताहों से नालियों की सफाई न होने के कारण गन्दा जल सड़कों पर बहने लगा है, जिससे दुर्गन्ध फैल रही है तथा मच्छरों की संख्या में वृद्धि हो गयी है। इससे डेंगू, मलेरिया जैसी बीमारियाँ फैलने का गम्भीर खतरा उत्पन्न हो गया है, विशेषकर बच्चों और वृद्धों के स्वास्थ्य के लिए यह अत्यन्त हानिकारक है। अतः आपसे नम्र निवेदन है कि यथाशीघ्र सफाई-कर्मचारी

भेजकर नालियों की सफाई करवाने तथा ब्लीचिंग पाउडर व कीटनाशक दवा छिड़कवाने की कृपा करें, ताकि मोहल्लेवासी स्वस्थ एवं स्वच्छ वातावरण में रह सकें।

सधन्यवाद।

भवदीय,
रामनगर निवासी